an>

Title: Regarding situation arising out of drought in Vidarbha and Marathwada in Maharashtra.

श्री प्रतापराव जाधव (बुलढाणा) : अध्यक्ष महोदया, गत तीन-चार सालों से महाराष्ट्र के विदर्भ और मराठवाड़ा में जो अकाल की स्थिति पैदा हुई है, उस सूखे के कारण विदर्भ, महाराष्ट्र और मेरे संसदीय क्षेत्र बुलढाणा में युवा किसान बहुत बड़ी संख्या में खुदकुशी कर रहे हैं। पिछले तीन सालों से किसानों ने बैंकों से फसल के लिए जो ऋण लिया है, हर साल वहां अकाल घोषित होने से उन ऋणों के हफ्ते गिराकर हर साल वहां पर नया ऋण किसानों को दिया जा रहा है। आज की स्थिति ऐसी है कि किसानों के पास जो भी प्रॉपर्टी या खेती है, उससे भी ज्यादा उनके ऊपर बैंकों के ऋण हो गए हैं। इन्हें वे कैसे देंगे, यह सोच कर ही वहां के युवा किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

महोदया, मैं आपके माध्यम से यह मांग करता हूं कि जिन किसानों ने वहां पर आत्महत्या की हैं, जिन पर बैंकों के फसल ऋण अभी तक लाखों की तादाद में हैं, उन्हें माफ किया जाए। जो पशु धन हैं, उनके लिए चारा न होने से किसान लोग उन्हें बाज़ारों में बेच रहे हैं, लेकिन दूसरे किसान उन्हें लेने को तैयार नहीं हैं। इसके कारण ये सब पशु धन को कसाई लोग लेकर उसे कसाईखानों में ले जाकर काट रहे हैं। एक तरफ तो हम गौ माता को बचाने के लिए कानून लाने की सोच रहे हैं, लेकिन हमारा यह जो पशु धन है, उसका वहां पर खुलेआम कत्ल किया जा रहा है। उसके लिए भी सरकार को उन किसानों की मदद करने की आवश्यकता है।

महोदया, अभी किसानों के पास जो थोड़ा-बहुत पानी है, उससे अगर अच्छी बिजली हमारे विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्र में दी जाती है और जो जले हुए ट्रांसफॉर्मर हैं, जो एक-एक महीने से नहीं बदले जा रहे हैं, अगर वे ट्रांसफॉर्मर उन क्षेत्रों में दो दिनों में बदल कर मिलें तो किसान वहां पर थोड़ा-बहुत चारा पैदा कर सकते हैं, अपने पशु धन को बचा सकते हैं, और थोड़ी तादाद में उनकी फसल भी हो सकती है। इसकी तरफ केन्द्र सरकार को ध्यान देना चाहिए।